4

सिंधु घाटी सभ्यता की मूर्तिकला

मूर्तिकला का इतिहास अति प्राचीन है। सभ्यता के प्राचीनतम अवशेष सिंधु घाटी में मिले हैं, आश्चर्य की बात यह है कि सिंधु घाटी की सभ्यता आरम्भिक सभ्यता की सूचक होने की अपेक्षा उत्कृष्टता की परिचायक है। जनरल कनिंघम और राखाल दास बैनर्जी ने सर्वप्रथम हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खोज का कार्य करवाया। फिर इस सभ्यता के अनेक केन्द्र गुजरात, राजस्थान, उत्तर प्रदेश तथा पंजाब आदि राज्यों में उभरकर प्रकाश में आए। इस सभ्यता का क्षेत्र काफी विस्तृत होने के कारण उत्खनन से मूर्तियों के उदाहरण भी प्रचुर संख्या में प्राप्त हुए हैं। माध्यम की दृष्टि से इन मूर्तियों को तीन भागों में बांटा जा सकता है।

1. पाषाण मूर्तियाँ 2. धातु मूर्तियाँ और 3. मिट्टी की मूर्तियाँ।

मिट्टी की अपेक्षा पत्थर की मूर्तियाँ कम ही प्राप्त हुई हैं, जिनमें ग्यारह मोहनजोदड़ों और दो हड़प्पा से मिली हैं। इन मूर्तियों के निर्माण में सेलखड़ी, अलावास्टर, चूनापत्थर, बलुआ पत्थर, सलेटी पत्थर आदि का प्रयोग किया गया है। सिंधु सभ्यता में सैकड़ों की संख्या में मिट्टी की बनी मूर्तियाँ प्राप्त हुई है, इनमें मानव मूर्तियाँ, पशु मूर्तियाँ, बच्चों के खिलौने शामिल हैं। इसके अतिरिक्त सिंधु सभ्यता में धातु मूर्तियों का भी अभूतपूर्व विकास हुआ। धातु की मूर्तियों के निर्माण में कलात्मक रूप देखने को मिला है। इसके अतिरिक्त प्राप्त अवशेषों में प्रचुर मात्रा में मुद्रा, मोहरें, आभूषण और खिलौने भी हैं जिनमें मानवीय, पशु-पक्षियों तथा दैनिक जीवन से संबंधित दृश्यों को भी प्रदर्शित किया गया है। यह कला के सुन्दर उदाहरण माने जाते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- सिंधु घाटी सभ्यता के विषय में टिप्पणी कर सकेंगे;
- सिंधु घाटी सभ्यता के खोजकर्ताओं के नाम और परिचय प्रस्तुत कर सकेंगे;

- सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेष कहाँ-कहाँ पाए गए हैं, यह पहचानकर उल्लेख कर सकेंगे;
- सिंधु घाटी सभ्यता की विभिन्न माध्यमों से बनी मूर्तिकला की व्याख्या कर सकेंगे;
- कलाकृतियों की रचना, आकार, माध्यम इत्यादि के बारे में पाठ से मिली जानकारी का उल्लेख कर पाएंगे।

4.1 योगी आवक्ष

प्रिय शिक्षार्थियों! सबसे पहले आप प्रसिद्ध कलाकृति योगी आवक्ष के बारे में जानेंगे।

बुनियादी सूचना

मूर्तियाँ विभिन्न प्रकार के पत्थरों से बनी हैं जिनमें सेलखड़ी नामक मुलायम पत्थर से बनी योगी की आवक्ष मूर्ति सर्वोपरि है। इस मूर्ति से तत्कालीन सिंधु सभ्यता के प्रचलित रिवाजों का पता

चित्र 4.1: योगी आवक्ष

टिप्पणियाँ

चलता है। उस समय अलंकृत वस्त्रों का प्रचलन हो गया था। योगी के उत्तरीय पर बना तिफूलिया डिजाइन कशीदा से बना है, बुना हुआ है या छपाई द्वारा छापा गया है, यह कहना कठिन है। योगी की तराशी हुई दाढ़ी एवं मकरी से निकाले गए बाल दर्शाते हैं कि उस काल में फैशन की समझ लोगों को थी। बारीकी और सफाई से बनी यह मूर्ति, इस बात का प्रतीक है कि सिंधु सभ्यता में तकनीक और शिल्प कला का विकास हो चुका था।

शीर्षक	:	**योगी आवक्ष**
माध्यम	:	सेलखड़ी पत्थर
आकार	:	14.5 × 11 से.मी.
स्थान	:	मोहनजोदड़ो
संग्रह	:	कराची नेशनल म्यूजियम, पाकिस्तान

सामान्य विवरण

मोहनजोदड़ो से प्राप्त मूर्तियाँ अधिकांशत: गढ़ी कले टीले की ऊपरी सतहों से मिली हैं। ये सभ्यता के बाद के चरणों की हैं। मूर्ति टीले की अंतिम परत से मिली है। शिल्प की दृष्टि से इस मूर्ति का गठन बहुत आकर्षक तथा प्रभावशाली है। इसका केश-विन्यास विशेष रूप से आकर्षक है जिसे कलाकार ने फीते से बंधा हुआ प्रदर्शित किया है। सम्भवत: इस मूर्ति पर किसी प्रकार का लेप लगाया गया था जो उत्खनन के बाद की सफ़ाई के समय मूर्ति निकल गया। मूर्ति के सजे सँवरे बाल, सलीके से बनी हुई दाढ़ी, आधी झुकी हुई आँखें और त्रिफलिया अलंकृत वस्त्र सिंधु सभ्यता की सामान्य मूर्तियों से इसे पृथक रूप में प्रस्तुत करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इस मूर्ति का धार्मिक महत्व होने के कारण कलाकार ने इसे पारम्परिक शैली में ही निर्मित किया है। इस मूर्ति के उत्तरीय पर जिस प्रकार की त्रिफुलिया आकृति चित्रित है वैसी आकृति का प्रयोग मिस्र, क्रीट, मेसोपोटामिया आदि सभ्यताओं में भी प्रचलित था, जहाँ उसका संबंध देव-मूर्तियों के साथ था। बैविलोन में मंदिरों के पुजारी भी इस त्रिफुलिया से सज्जित वस्त्र पहनते थे। इस मूर्ति की वस्त्र-सज्जा और आधे खुले नेत्र आदि लक्षणों के आधार पर यह मूर्ति किसी कुलीन व्यक्ति की प्रतीत होती है। दाढ़ी वाले पुरुष की यह आवक्ष मूर्ति किसी योगी की प्रतीत होती है। यह पुरुष आकृति दाढ़ी वाली है पर होठ का ऊपरी भाग साफ़ है। सीधी भवें, पतली आँखें एक दूसरे समय की याद दिलाती हैं। उसके माथे और दाँये हाथ पर आभूषण और भुजबंध है। ललाट छोटा और पीछे की ओर झुका हुआ है। गर्दन सामान्य से अधिक मोटी है। शिल्प व अलंकरण की दृष्टि से यह मूर्ति सिंधुकालीन मूर्तियों में पृथक रूप से दिखाई देती है।

चूंकि सेलखड़ी पत्थर बहुत ही मुलायम होता है इसलिए संभवत: उस समय के कलाकार ने किसी अन्य नुकीले पत्थर या हड्डी के माध्यम से धीरे-धीरे खुरचकर और खोदकर इस शिल्प को रूप दिया होगा या फिर किसी अन्य धातु; जैसे-काँसे या ताँबे के औजार से इसे बनाया होगा।

पाठगत प्रश्न 4.1

1. योगी आवक्ष की मूर्ति किससे बनी है?
2. योगी आवक्ष मूर्ति कहाँ से प्राप्त हुई?
3. योगी की भुजा पर कौन-सा आभूषण है?

4.2 नर्तकी

हड़प्पाकाल की एक प्रसिद्ध प्रतिमा या मूर्ति 'नर्तकी' है। आइए इस कलाकृति के विषय में जानें।

बुनियादी सूचना

सिंधु घाटी सभ्यता में धातु-शिल्प का अभूतपूर्व विकास हुआ था। कलाकारों ने धातु-मूर्तियों के निर्माण में निपुणता का परिचय दिया है। धातु की कलात्मक आकृतियों में मोहनजोदड़ो से प्राप्त कांस्य निर्मित नर्तकी की मूर्ति उसकी शानदार शिल्पकला को दर्शाती है। मूर्ति के द्वारा किसी आदिवासी नारी के यथार्थ रूपांकन का प्रयास किया गया है। मूर्ति के अंग-प्रत्यंग में लम्बाई का भाव अधिक है। होठ मोटे, चपटी नासिका और दाहिनी भुजा की मोटाई कलाई से लेकर कोहनी तक एक समान है। दाँई भुजा में केवल दो चूड़ियाँ हैं। बांई भुजा में कंधे तक चूड़ियां हैं। गले में नेकलेस जैसा आभूषण पहने है। जिसमें कई लंबे पेन्डेन्ट हैं। छरहरे शरीर, क्षीण काया और अनावृत स्तन, कमर और जंघाओं का रूप प्रदर्शित कर कलाकार ने नारी-सौन्दर्य को मूर्त रूप देने का प्रयास किया है। पैरों के संतुलन और गतिमय रूप को प्रस्तुत कर एक नृत्यरत नारी की स्वाभाविक मुद्रा के अंकन में कलाकार ने अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। संभवत: इसका कारण यह ही होगा कि संपूर्ण मूर्ति का निर्माण एक ही प्रयास में साँचे में ढालकर किया गया है। इससे यह भी निर्दिष्ट है कि वे सांचे में मूर्ति ढालने की क्रिया से परिचित थे। उसकी गतिशील मुद्रा से अभिव्यक्त होता है कि वह इस समय नृत्य के बाद थोड़ी देर आराम कर रही है और आगे के नृत्य के विषय में विचार कर रही है। यद्यपि यह मूर्ति देखने में छोटी है, पर अपनी विनम्रता और अपनी कामुकता में बड़ी प्रभावी है। यह मूर्ति मॉडल की पद्धति से बनाई गई है।

शीर्षक	:	**नर्तकी**
माध्यम	:	कांसा
रचना काल	:	2500 ईसा पूर्व
प्राप्ति स्थान	:	मोहनजोदड़ो
आकार	:	4.2 से. मी.
संग्रह	:	राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

चित्र 4.2: नर्तकी

सामान्य विवरण

मोहनजोदड़ो से प्राप्त काँसे की यह मूर्ति मूर्तिकला का एक सुन्दरतम रूप है। इस मूर्ति को नर्तकी के रूप माना गया है। इस मूर्ति में कलाकार ने सन्तुलन, गति और नारी की स्वाभाविक मुद्रा के अंकन में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। बहुत ही मुग्ध कर देने वाली भाव-भंगिमा से प्राप्त यह मूर्ति मोहनजोदड़ो से प्राप्त मूर्ति शिल्प में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त नर्तकी की यह मूर्ति त्रिभंगी मुद्रा में आकर्षक और भावयुक्त है। सिर एक तरफ झुकी हुई अवस्था में है। घुंघराले बाल हैं जिनका पीछे की तरफ जूड़ा बंधा हुआ है। आँखें बड़ी और आधी खुली

हुई हैं। बालों में अलंकरण सजे हैं। उसके होठ मोटे हैं। लम्बे पैर और भुजाओं के साथ सूक्ष्मकोटि की मुद्रा सूचित करती है कि यह नृत्यकला में अभ्यस्त किसी नर्तकी की मूर्ति है।

यह मूर्ति लॉस्टवैक्स तकनीक से बनाई गई है। लॉस्टवैक्स विधि में सर्वप्रथम मोम की मूर्ति बना ली जाती थी और उस पर चिकनी मिट्टी तथा गोबर के गारे का लेप कई बार किया जाता था। इसके सूखने के बाद से गर्म करके मोम को पिघलाकर निकाल लिया जाता था। जिससे मोह हटने से वहाँ खाली स्थान रह जाता है। तब उस स्थान के भीतर पिघलाकर धातु को डाल दिया जाता था जो कुछ देर बाद ठण्डी होकर मूर्ति रूप में परिणित हो जाती थी। फिर मिट्टी का ऊपरी ढाँचा तोड़कर निर्मित मूर्ति को निकाल लिया जाता था।

पाठगत प्रश्न 4.2

1. 'नर्तकी' मूर्तिशिल्प कहाँ संग्रहित है?
2. 'नर्तकी' मूर्ति किस माध्यम में बनी है?
3. 'नर्तकी' मूर्ति को ढालने में किस तकनीक का उपयोग किया गया है?

क्रियाकलाप

अपने नजदीकी संग्रहालय या कला-दीर्घा में जाइए और पत्थर तथा टेराकोटा से बनी मूर्तियों के चित्र खींचिए। इसके इन मूर्तियों की रंग योजना, गति, संयोजन, मुद्रा आदि के विषय में लिखिए।

4.3 मातृदेवी

प्रिय शिक्षार्थियों! क्या आप 'मातृदेवी' के बारे में जानते हैं। यह एक सुंदर स्त्री आकृति है जो सिंधु घाटी सभ्यता की कलाकृतियों में से एक है। आइए इसके विषय में जानें।

बुनियादी सूचना

सिंधु घाटी सभ्यता से प्रकट होता है कि तत्कालीन लोगों के धार्मिक जीवन में मातृदेवी की उपासना का महत्वपूर्ण स्थान था। अलंकरण की शैली की एकरूपता एवं विस्तृत प्रदेश में इन मूर्तियों की

प्राप्ति से यही प्रकट होता है कि इनका निर्माण धार्मिक पूजा के लिए किया जाता था। यह निश्चित है कि सिंधु घाटी के लोगों ने अपने पीछे मातृ-पूजन की परंपरा छोड़ी जिसे भारतीय लोगों ने शक्ति देवी, मातृ देवी एवं ग्राम देवी के रूप में स्वीकार किया। मातृ-पूजन का प्रचलन प्राचीन काल में मेसोपोटामिया आदि सभ्यताओं में भी था। संभवतः मातृदेवी पूजा का प्रारंभ लोगों की जीविका के साधन-कृषि से संबंधित था और सिंधुकाल में पोषण करने वाली धरती माता के रूप में मातृदेवी की उपासना की जाती थी। मोहनजोदड़ो, हड़प्पा आदि स्थानों में मिट्टी की बनी कुछ विशिष्ट नारी-मूर्तियों को पुरातत्वशास्त्री मातृदेवी की मूर्तियाँ स्वीकारते हैं। मातृदेवी की यह मूर्ति हड़प्पा से प्राप्त हुई टैराकोटा मूर्तियों में से एक है।

चित्र 4.3: मातृदेवी

शीर्षक	:	**मातृदेवी**
माध्यम	:	टैराकोटा
रचना काल	:	2500 ई. पू.
प्रापत स्थान	:	मोहनजोदड़ों
आकार	:	8.5 × 3.4 से. मी.
संग्रह	:	राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

सामान्य विवरण

यह मूर्ति सिंधु घाटी सभ्यता के कारीगरों की उच्च स्तर की परिपक्तवता को दर्शाती है। लगभग नग्न आकृति की मूर्ति की आँखें मिट्टी की दो गोलियों से बनाई गई हैं। नाक दबी हुई है। कमरबंद में एक स्कर्ट होती है जो शरीर के निचले हिस्से को ढँकती है। यह आकृति भारी हार, पेडेंट और बाजूबंद से अलंकृत है। इस खड़ी आकृति का निचला हिस्सा टूटा हुआ है। बायाँ हाथ भी टूटा हुआ है। उनका पंखों के आकार का मुकुट दो कटोरियों से घिरा हुआ है। कटोरे पर कालिख के निशान से पता चलता है कि उनका उपयोग लैंप या अगरबती के रूप में किया जाता था और मूर्ति मन्नत के रूप में थी। यह सिंधु घाटी सभ्यता की मूर्तिकला का उत्कृष्ट उदाहरण है।

मूर्ति को हाथ से बनाया गया है। आँखें और स्तन मिट्टी की गोलियों से बने हैं। मिट्टी के एक छोटे से रोल को ऊंगलियों से दबा कर नाक को आकार दिया गया है। आभूषण आकृति पर चिपका हुआ था। पैरों में कोई आकृति नहीं है। एक बार जब मिट्टी की आकृति तैयार हो जाती है ओर सूख जाता है, तो इसे भट्ठी में पकाया जाता था। बेकिंग से इसका रंग लाल हो जाता है। मूर्तियाँ बनाने की इस विधि को टेराकोटा के नाम से जाना जाता है। टेराकोटा उत्पादों की कभी-कभी पोलिश भी की जाती थी।

पाठगत प्रश्न 4.3

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. मातृदेवी की मूर्ति को बनाने के लिए .... का उपयोग किया गया है।
2. मातृदेवी मूर्ति .... से प्राप्त हुई।

आपने क्या सीखा

सिंधु घाटी सभ्यता की मूर्तिकला

- मातृदेवी
  - टेरोकोटा (माध्यम)
  - मोहनजोदड़ों (प्राप्ति-स्थल)
- योगी आवक्ष
  - सेलखड़ी पत्थर (माध्यम)
  - मोहनजोदड़ों (प्राप्ति-स्थल)
- नर्तकी
  - कांसा (माध्यम)
  - मोहनजोदड़ों (प्राप्ति-स्थल)

सीखने के प्रतिफल

शिक्षार्थी

- मिट्टी का उपयोग करते हुए स्वयं ही कुछ-न-कुछ मूर्तियाँ बनाते हैं।
- आसपास सहज ही प्राप्त रंगों से प्रतिमा को रंगते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. सिंधु घाटी सभ्यता में निर्मित मूर्तियों की तकनीक और विधि का वर्णन कीजिए।
2. सिंधु घाटी सभ्यता में मूर्तियों की विषयवस्तु के बारे में आप क्या जानते हैं? उल्लेख कीजिए।
3. योगी की आवक्ष मूर्ति का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।
4. नर्तकी की कांस्य मूर्ति का विवरण लिखिए।
5. मातृदेवी की प्रतिमाओं के महत्व का उल्लेख कीजिए।
6. मातृदेवी की मूर्तियों का उपयोग लिखिए।
7. मातृदेवी की मूर्तियों के आधार पर अन्य सभ्यताओं से क्या समानता ढूँढी जा सकती है?
8. 'नर्तकी' के दाएँ और बाएँ हाथ के आभूषणों में अंतर लिखिए।
9. 'नर्तकी' की मूर्ति के बारे में अपने शब्दों में टिप्पणी लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1

1. सेलखड़ी पत्थर
2. गढ़ी वाले टीले से
3. भुजबंध है

4.2

1. नेशनल म्यूजियम, नई दिल्ली में
2. कांसे से
3. ढलाई की लास्टवैक्स तकनीक का

4.3

1. टेराकोटा से
2. मोहनजोदड़ों

शब्दकोश

टैराकोटा	मिट्टी को पकाकर बनी मूर्ति
आवक्ष	धड़ से लेकर ऊपर तक
उत्तरीय	वक्ष आवरण (वस्त्र)
लॉस्टवैक्स	धातु की मूर्ति की ढलाई का एक प्रकार जिसमें पहले मूर्ति को मोम से तैयार किया जाता है। गर्म पिघला धातु डालने पर मोम जल जाता है और उसके स्थान पर पिघला धातु मूर्ति रूप में ढल जाता है।